कमलनेत्र स्तोत्र
हरिहर स्तोत्र
और
नागलीला

मूल्य : २.००

रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन)
हरिद्वार-249401

प्रकाशक :
रणधीर बुक सेल्स, प्रकाशन
श्रवणनाथ नगर, समीप हैप्पी स्कूल
हरिद्वार-२४९४०१

मूल्य : दो रुपये मात्र

निवेदन :
प्रचार के लिए बांटने वाले सज्जन
प्रकाशक से सम्पर्क करें उन्हें
पुस्तकें लागत मात्र पर
दी जायेंगी।

कमल नेत्र स्तोत्र

श्री कमल नेत्र कटि पीताम्बर,
अधर मुरली गिरधरम् ।
मुकुट कुण्डल कर लकुटिया,
सांवरे राधेवरम् ।। १ ।।
कूल यमुना धेनु आगे,
सकल गोपयन के मन हरम् ।
पीत वस्त्र गरुड़ वाहन,
चरण सुख नित सागरम् । २ ।
करत केल कलोल निश दिन,

कुंज भवन उजागरम् ।

अजर अमर अडोल निश्चल,
पुरुषोत्तम अपरा परम । ३ ।
दीनानाथ दयाल गिरिधर,
कंस हिरणाकुश हरणम ।
गल फूल भाल विशाल लोचन,
अधिक सुन्दर केशवम् । ४ ।
बंशीधर वासुदेव छइया,
बलि छल्यो श्री वामनम् ।
जब डूबते गज राख लीनों,
लंक छेद्यो रावनम् । ५ ।
सप्त दीप नवखण्ड चौदह,

भवन कीनों एक पदम् ।

द्रोपदी की लाज राखी,
कहां लौ उपमा करम् ।। ६ ।।
दीनानाथ दयाल पूरण,
करुणा मय करुणा करम् ।
कविदत्तदास विलास निशदिन,
नाम जप नित नागरम् । ७ ।
प्रथम गुरु के चरण बन्दों,
यस्य ज्ञान प्रकाशितम् ।
आदि विष्णु जुगादि ब्रह्मा,
सेविते शिव शंकरम् । ८ ।
श्रीकृष्ण केशव कृष्ण केशव,
कृष्ण यदुपति केशवम् ।

श्रीराम रघुवर, राम रघुवर,
राम रघुवर राघवम् ।। ९ ।।
श्रीराम कृष्ण गोविन्द माधव,
वासुदेव श्री वामनम् ।
मच्छ-कच्छ वाराह नरसिंह,
पाहि रघुपति पावनम् । १० ।
मथुरा में केशवराय विराजे,
गोकुल बाल मुकुन्द जी ।
श्री वृन्दावन में मदन मोहन,
गोपीनाथ गोविन्द जी । ११ ।
धन्य मथुरा धन्य गोकुल,

जहाँ श्री पति अवतरे ।

धन्य यमुना नीर निर्मल,
ग्वाल बाल सखावरे। १२।
नवनीत नागर करत निरन्तर,
शिव विरंचि मन मोहितम्।
कालिन्दी तट करत क्रीड़ा,
बाल अद्भुत सुन्दरम्। १३।
ग्वाल बाल सब सखा विराजे,
संग राधे भामिनी।
बंशी वट तट निकट यमुना,
मुरली की टेर सुहावनी। १४।
भज राघवेश रघुवंश उत्तम,
परम राजकुमार जी।

सीता के पति भक्तन के गति,
जगत प्राण आधार जी। १५।
जनक राजा पनक राखी,
धनुष बाण चढ़ावहीं।
सती सीता नाम जाके,
श्री रामचन्द्र प्रणामहीं। १६।
जन्म मथुरा खेल गोकुल,
नन्द के हृदि नन्दनम्।
बाल लीला पतित पावन,
देवकी वसुदेवकम्। १७।
श्रीकृष्ण कलिमल हरण जाके,
जो भजे हरिचरण को।

भक्ति अपनी देव माधव,
भवसागर के तरण को । १८ ।
जगन्नाथ जगदीश स्वामी,
श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम् ।
द्वारिका के नाथ श्री पति,
केशवं प्रणमाम्यहम् । १९ ।
श्रीकृष्ण अष्टपदपढ़तनिशदिन,
विष्णु लोक सगच्छतम् ।
श्रीगुरु रामानन्द अवतार स्वामी,
कविदत्त दास समाप्तम् । २० ।

—— o ——

।। हरिहर स्तोत्र ।।

प्रथम जो लीजे है गणपति का नाम ।
तो होवें सभी काम पूरण तमाम ।
करे बेनती दास कर हर का ध्यान ।
जो कृपा करी आप गिरधर हरी ।
हरि हर हरि हर हरि हर हरी ।
मेरी बार क्यों देर इतनी करी ।
ब्रह्माविष्णुशिवजी हैं एको स्वरूप ।
हुए एक से रूप तीनों अनूप ।
रचनपालन विनाशहेत भये तीन रूप ।
चौबीसोंअवतारोंकीमहिमाकरी । हरि०

शक्ति स्वरूपी और परमेश्वरी।
रखा अपना नाम महा ईश्वरी।
योगीश्वर मुनीश्वर तपीश्वर ऋषि।
तेरी जोत में लीन परमेश्वरी। हरि॰
तेरा नाम है दुःख हरण दीनानाथ।
जो बरसन लगा इन्द्र गुस्से के साथ।
रखा तुमने ग्वालों को दे करके हाथ।
वहाँ नाम अपना धरा गिरधारी। हरि॰
असुर ने जो बांधा था प्रहलाद को।
न छोड़ा भक्त ने तेरी याद को।
न कीनी तवक्कफ खड़े दाद को।
धरा रूप नरसिंह पीड़ा हरी। हरि॰

नहीं छोड़ता राम का था जिकर।
तो गुस्से में बाँधा था उसको पिदर।
कहा के करूँ मैं जुदा तन से सर।
तोखम्ब फाड़निकलेनादेरीकरी। हरि०
चले जल्द आये प्रहलाद की बेर।
हिरणाकुशको मारा ना कीनी थी देर।
किया रूप बावन ब्राह्मण का फेर।
बली के जो द्वारे आ ठाड़े हरी। हरि०
था जलग्राह ने गज को घेरा जभी।
ना लीना था नाम उसने तेरा कभी।
जो मुश्किल बनी शरण आया तभी।
हरि रूप होकर के पीड़ा हरी। हरि०

अजामिल को तारा ना कीनी थी देर।
चखे प्रेम से जूठे भिलनी के बेर।
करी बहुत कृपा जो गणिका की बेर।
अजामिल कहाँकरसके हमसरी। हरि०
जभी भक्त पै आके बिपता पड़ी।
सुदामा की थी पल में पीड़ा हरी।
है इसने तेरे नाम की धुन धरी।
नाराखेतूमुश्किलकिसीकीअड़ी। हरि०
नरसी भक्त की हुण्डी करी।
सांवलशाह ऊपर थी उसलिखधरी।
ढूंढत फिरे थी लगी थरथरी।
सांवलशाह हो उसकीहुण्डीभरी। हरि०

वक्रीदन्त ने जब सताई मही।
न सूझी बहुत कुछ आतुर भई।
सिरफ ओट तेरी मही ने लई।
किया रूप वाराह रक्षा करी। हरि॰

जो सैयाद ने पंछी को था दुःख दिया।
वह आतुर भया नाम तेरा लिया।
तभी साँप सैयाद को डस गया।
छुड़ायाथा पंछीको जो हरहरि। हरि॰

वो रावण असुर जो सिया ले गया।
निकट मौत आई वह अन्धा भया।
असुर मार राजा विभीषण किया।
सियालेकेआए अयोध्यापुरी। हरि॰

जो गौतमने अहिल्याको बद्दुआ दई।
उसी वक्त अहिल्या शिला हो गई।
पड़ी थी वह रास्ते में मुद्दत हुई।
लगाकेचरणमुक्तिउसकीकरी। हरि०
जो संकट बना एकनामी को आ।
कहे बादशाह मेरी गौ दे जिवा।
तो नामे ने बिनती तुम्हारी करी।
वहाँ नाथ नामे की पीड़ा हरी। हरि०
शंखासुर असुर एक पैदा हुआ।
ब्रह्मा के वह वेद सब ले गया।
ब्रह्मा आपकी शरण आकर पड़ा।
मत्स्य रूप हो वेद लाये हरी। हरि०

यमला और अर्जुनकियाजो कुछ पाप।
हुए जड़ जो उनको हुआ था शराप।
उखल सेती आ नाथ पहुंचे जो आप।
ऊखल साथहीउनकीआपदा हरी। हरि०
द्रोपदी के कौरव जुल्म जोर साथ।
उतारन लगे चीर पट अपने हाथ।
किया याद द्रोपदी तुझे दीनानाथ।
रखी लाज उसकी नगन ना करी। हरि०
वो है याद तुमको जो रुकमन की बार।
खबर देने आया था जुन्नार दार।
चढ़े नाथ रथ पर हुए थे सवार।
रुकम बांधरुकमनको लाये हरी। हरि०

असुर एक दर पै सतावन लगा।
दशों दिश शिवां को फिरावन लगा।
धरन हाथ सिर शिव के इच्छा करी।
शक्तिरूप हो शिवकी रक्षाकरी। हरि०
दुर्वासा गयाशिष्यले पांडवों के पास।
भोजनकरन की जो कीनी थी आस।
तो राजे छलने की इच्छा करी।
वहाँनाथपांडवों की आपदाहरी। हरि०
जो धन्ने भक्त माँग ठाकुर लिया।
त्रिलोचन मिसर हंस बट्टा दिया।
भगत का जी दृढ़ निश्चय देखा हरी।
भोजनकिया धरती हुई हरीभरी। हरि०

युधिष्ठिर पै जब कोप कौरव हुआ।
कि हर दो तरफ जंग आकर मचा।
तभी खून का सिन्धु बहने लगा।
टटीरी के बच्चों की रक्षा करी। हरि०
तेरे अन्त को कोई आवे कहाँ।
माधोदास को जाड़ा लगा जहां।
छप्पर बांधा होकर के पहुँचे वहां।
छप्पर बांधकर उसकी रक्षाकरी। हरि०
गरुड़ की सवारी पर अब तक रहा।
बड़ा ही तअज्जुब है हमको भया।
कड़ाह गरम कर तेल जब वह चढ़ा।
सुधन्वा को आकर बचाया हरी। हरि०

बड़ा राक्षसों का जुल्म था जहां।
ऋषीश्वर मुनिश्वर खराबी नशां।
मारे दैत्य सब ऋषि शादमां।
बड़ी कृपाकरी पीड़ा भगतां हरी। हरि॰
ध्रुवन सुखन माता को छोड़ कर।
चले घर से बाहर तेरी आस पर।
लगे भजन करने तब इक पांव पर।
किया दास उसको गले ला हरी। हरि॰
तमाम उमर कंस दुश्मन रहा।
पल में तूने उसका उद्धार किया।
उगरसैन को राज मथुरा दिया।
सन्दीपन का बेटा जिवाया हरी। हरि॰

लिखी बाप की उसको चिट्ठी गई ।
नहीं एक पल ढिल्ल करनी पड़ी ।
लिखी विष थी जा उसकोविषयाकरी ।
लिखीकुछथी ईश्वरने कुछजाकरी । हरि॰
जो कुब्जा से सन्दल लिया मुरलीधर ।
लगे देखने लोग इधर और उधर ।
तअज्जुब रहे देख कुब्जा ऊपर ।
रखा पाओं पर पाओं सीधी करी । हरि॰
राजा पकड़ जहर कातिल दिया ।
जो पीये तब उसको न छोड़े जिया ।
मीरा ने तेरा नाम लेकर पिया ।
उसीविषसे जाउसको अमृतकरी । हरि॰

ये अड़सठ के ऊपर चौबीस हजार।
रखे बहुत राजा जरासंध तार।
वहाँ भक्त तंगी जो कीनी पुकार।
उसी वक्त उसकीजो आपदाहरी। हरि°
दीनानाथ जो नाम तेरा भया।
वही नाम सुन दास शरणी पया।
अपने नाम की लाज़ राखो हरी।
मेरे सब दुःख काट राखो हरी। हरि°
तू हैगा ब्रादर बलीराम का।
मैं राखूं भरोसा तेरे नाम का।
नहीं कोई दूजा तेरे नाम का।
तू है जगत रची करता हरी। हरि°

मेरी विनती को सुनो लाल जी।
यह गफलतका नहीं वक्त गोपाल जी।
करो. मुझको दुनियाँ में खुशहाल जी।
तेरे बिन मेरा कौन है दुख हरि। हरि०
तू ही जगत बीच तारन तरन।
तू ही है सकल सृष्टि कारण करण।
विभीषण जो आया था तेरी शरण।
बखशीश लंका थी उसको करी। हरि०
कृष्ण दास की विनती हर सुनी।
सर्व सुख दिए तुम सर्व के धनी।
आनन्द भया बहुत करुणा करी।
भक्त अपने की पंदवी ऊँचीकरी। हरि०

करी हर कृपा दरस दिया दिखाई
अपनी जान संकट से लिया बचाई।
मन की मुराद सभी मिल आई।
पूर्ण कृपा कर लिया है हरी। हरि०

(प्रातःकाल पढ़ने के वास्ते)

।। नागलीला ।।

श्रीकूल यमुना धेनु आगे,
जल में बैठे प्रभुजी आन के।
नाग नागिनी दोनों बैठे,
श्रीकृष्ण जी पहुँचे आन के।
नागिनी कहती सुनो रे बालक,
जाओ यहाँ से भाग के।
तेरी सूरत देख मन दया उपजी,
नाग मारेगा जाग के।
किसका बालक पुत्र कहिए,
कौन तुम्हारो ग्राम है।

किसके घर तू जनमिया रे,
बालक क्या तेरा नाम है।
वासुदेव जी का पुत्र कहिए,
गोकुल हमारा ग्राम है।
श्री माता देवकी जन्मिया मैंनू,
श्री कृष्ण हमारा नाम है।
लेरे बालक हत्थां दे कंगन,
कन्नांदेकुंडल सवालाखकी बोरियां।
इतना द्रव्य लेजा रे बालक,
दियां नागां कोलों चोरियाँ।
क्या करां तेरे हाथों के कंगन,
कन्नांदेकुंडल सवालाखकी बोरियाँ।

फूल फूल मथुरा की नगरी,
देवकी मंगल गाया।
भगत हेत प्रभो जन्म लेकर,
लंका में रावण मारिया।
काली प्रहलाद नाग नाथिया,
मथुरा में कंस पछारिया।
सप्त दीप नौ खंड चौदह,
सभी तेरा है पसारिया।
सूरदास जो तेरा यश गावे,
तेरे चरणां तों बलहारियाँ।

— : ० : —

।। आरती श्रीकृष्णचन्द्र की ।।

आरती युगल किशोर की कीजै,
राधे धन न्यौछावर कीजै ।। टेक ।।
रवि शशि कोटि बदन की शोभा,
तेहि निरख मेरा मन लोभा । १ ।
गौर श्याम मुख निरखत रीझे,
प्रभु को स्वरूप नयन भर पीजे । २ ।
कंचन थार कपूर की बाती,
हरि आए निर्मल भई छाती । ३ ।
फूलन की सेज फूलन की माला,
रत्न सिंहासन बैठे नन्दलाला । ४ ।

मोर मुकुट कर मुरली सोहे,
नटवर वेष देख मन मोहे। ५।
आधा नील पीत पटसारी,
कुञ्ज बिहारी गिरवर धारी। ६।
श्री पुरुषोत्तम गिरवर धारी,
आरती करत सकल ब्रजनारी। ७।
नन्दलाल वृषभानु किशोरी,
परमानन्द स्वामी अविचल जोरी। ८।

— :०: —

।। आरती ॐ जय जगदीश हरे ।।

ॐ जय जगदीश हरे स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट क्षण में दूर करे । ॐ
जो ध्यावे फल पावे दुःख विनशे मन का ।
सुख सम्पत्ति घर आवे कष्ट मिटें तन का । ॐ
मात-पिता तुम मेरे शरण गहूँ किसकी ।
तुम बिन और न दूजा आस करूं जिसकी । ॐ
तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यामी ।
पार ब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी । ॐ
तुम करुणा के सागर तुम पालन कर्ता ।
मैं मूरख खल कामी कृपा करो भर्ता । ॐ
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति ।
किस विधिमिलूं दयामयतुमको मैं कुमती । ॐ

दीनबन्धु दुःख हर्ता तुम ठाकुर मेरे।
अपने हाथ उठाओ द्वार पड़ा तेरे। ॐ
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा। ॐ

दीनबन्धु दुःख हर्ता तुम ठाकुर मेरे।
अपने हाथ उठाओ द्वार पड़ा तेरे। ॐ
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा। ॐ